

अंक १२

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषा का अध्ययन करनेका सुगम उपाय)

द्वादश भाग।

लेखक और प्रकाशक.
श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

SRIRAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. 3011

प्रथमावृत्ति १०००

संवत १९८०, शके १८४७, सन १९२६

मूल्य ।८) पांच आने।

वैदिक धर्म के ग्रंथ।

[१] यजुर्वेद का स्वाध्याय।

(१) नरमेध। मू. १)
(२) एक ईश्वर उपासना। मू. ॥)
(३) शांतिका सच्चा उपाय। मू. ॥)

[२] देवता परिचय ग्रंथमाला।

(१) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥)
(२) ऋग्वेद में रुद्र देवता। मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओं का विचार। मू० ≡)
(४) देवता विचार। मू० ≡)
(५) वैदिक अग्निविद्या। मू० १॥)

[३] योग साधन माला।

(१) संध्योपासना। मू० १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान। मू० ॥)
(३) वैदिक प्राण विद्या। मू० १)



अंक १२

संस्कृत-पाठ-माला ।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय)

द्वादश भाग ।

लेखक और प्रकाशक.
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२६

मूल्य ।⁻) पांच आने ।

समास विचार ।

संस्कृत भाषामें समासोंका प्रयोग स्थान स्थानपर होता है। इस लिये संस्कृत भाषाका अध्ययन करने वाले हरएक जिज्ञासु-को समासोंके साथ परिचय करना आवश्यक है। इस पुस्तक में अत्यंत सुगम रीतिसे सब प्रकारके समासों के साथ पाठकोंका परिचय कराया है। इस लिये इस पुस्तक के अध्ययन से पा-ठक उत्तम प्रकार से समासों के साथ परिचित हो सकते हैं। आशा है कि इसका उत्तम अध्ययन करके पाठक संस्कृत भाषाके मंदिरमें प्रविष्ट हो जांयगे।

स्वाध्यायमंडल, औंध
(जि० सातारा) २९। १।२७

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

ॐ

संस्कृत पाठ माला ।

द्वादश भाग ।

पाठ १

समास प्रकरणम् ।

संस्कृत भाषामें समासोंका प्रयोग बहुत होता है । इन समासोंके उदाहरण ये हैं:—

	समास	मूल वाक्य		अर्थ
१	सूर्यकिरणः	(सूर्यस्य किरणः)	=	सूर्यका किरण ।
२	वृक्षमूलम्	(वृक्षस्य मूलम्)	=	वृक्षका मूल ।
३	तद्रूपम्	(तस्य रूपम्)	=	उसका रूप ।

इन उदाहरणोंमें पाठक ध्यानसे देखेंगे तो उनको पता लग जायगा कि वाक्योंका ही संक्षिप्त रूप समास होता है। " सूर्यस्य किरणः " इतना विस्तृत वाक्य बोलनेकी अपेक्षा "सूर्यकिरण" इतना कहने मात्रसे ही संस्कृत में कार्य होता है । समासों द्वारा यह सुविधा होती है । ये समास छः प्रकारके हैं—

१ द्वंद्व, ३ द्विगु, ३ तत्पुरुष, ४ कर्मधारय, ५ बहुव्रीहि, और ६ अव्ययीभाव ।

ये छः प्रकारके समास हैं। अब इनका विवरण देखिये–

१ द्वंद्व समास ।

संस्कृत भाषामें द्वंद्व समासके दो भेद प्रचलित हैं। १ इतरेतरयोग – द्वंद्व समास और २ समाहार-द्वंद्व समास।

इतरेतरयोगका अर्थ यह है कि अन्यान्योंका संयोग। इसके उदाहरण देखिये।

१ रामकृष्णौ — (रामश्च कृष्णश्च) — राम और कृष्ण
२ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः — (रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च) — राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न।
३ स्त्रीपुरुषौ — (स्त्रीश्च पुरुषश्च) – स्त्री और पुरुष।
४ हरिहरौ -(हरिश्च हरश्च) — हरि और हर।
५ इंद्रासोमौ — (इंद्रश्च सोमश्च) — इंद्र और सोम।
६ मातापितरौ– (माता च पिता च) – माता और पिता
७ शीतोष्णे — (शीतं च उष्णं च) – शीत और उष्ण।

यहां पाठक देख सकते हैं कि दो पदार्थोंका जहां संबंध होता है वहां द्विवचन और तीन तथा तीनसे अधिक पदार्थों के संबंध के समय बहुवचन बनता है। यह द्वंद्व समास बहुत सुगम है और वारंवार प्रयोगमें आता है। अब इसके वाक्य देखिये–

संस्कृत वाक्य।

तव मातापितरौ कुत्र गतौ? २ मम मातापितरौ गृहं गतौ। ३ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः इदानीं किं कुर्वन्ति? ४ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः इदानीं वनं गच्छन्ति। ५ गृहस्थाश्रमे स्त्रीपुरुषयोः संबंधः भवति।

भाषा वाक्य।

१ तेरी माता पिता कहां गयीं? २ मेरी माता पिता घरको गयीं। ३ राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न अब क्या करते हैं? ४ राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न अब वनको जाते हैं। ५ गृहस्थाश्रममें स्त्रीपुरुषों का संबंध होता है।

द्वंद्व समासके दूसरे प्रकारका नाम "समाहार द्वंद्व" है इसमें संग्रह अथवा इकट्ठा होनेका भाव रहता है और इसका प्रयोग एकवचनमें नपुंसकलिंगमें ही होता है। इसके उदाहरण ये हैं-

१ पाणिपादमुखम्–(पाणी च पादौ च मुखं च) = हाथ, पांव और मुख। इनका समुदाय।
२ गवाश्वं – (गावश्च अश्वाश्च) = गौएं और घोडे।
३ दासीदासं – (दास्यश्च दासाश्च) = दासीयां और दास।
४ शंखपटहं – (शंखश्च पटहश्च) = शंख और ढोल।
५ गंगाशोणं – (गंगा च शोणश्च)=गंगानदी और शोणनद।

इस रीतिसे यह समुदाय अर्थमें नपुंसक लिंगमें एक वचनमें समास बनता है।

" च " शब्दका अर्थ " और " है। इस अर्थका संक्षेप इस द्वंद्व समासमें होता है और इस चकारको हटानेसे यह समास बनता है। इतना ही इस विषयमें ध्यानमें धरना चाहिये देखिये—

मूल वाक्य	भाषामें अर्थ	द्वंद्व समास
रामश्च रावणश्च	= (राम और रावण)	= रामरावणौ ।
शिवश्च केशवश्च	= (शिव और केशव)	= शिवकेशवौ ।
व्याघ्रश्च सिंहश्च	= (व्याघ्र और सिंह)	= व्याघ्रसिंहौ ।

पाठक इस प्रकार द्वंद्व समासका प्रयोग कर सकते हैं। क्यों कि यह सबसे सुगम समास है। समझनेके लिये और करनेके लिये भी इसमें सुगमता है। तथा और देखिये:—

बालश्च वृद्धश्च = बालवृद्धौ ।

कोकिलश्च मयूरश्च = कोकिलमयूरौ ।

व्याघ्रश्च वराहश्च महिषश्च – व्याघ्रवराहमहिषाः ।

कूपश्च तडागश्च = कूपतडागौ ।

वटश्च आम्रश्च = वटाम्रौ ।

वटश्च आम्रश्च पिप्पलश्च = वटाम्रपिप्पलौ ।

ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च = ब्राह्मणक्षत्रियौ ।

पाठ २

द्विगु - समास ।

जिस समासमें संख्यावाचक शब्द प्रथम स्थानमें होता है प्रायः उसका नाम द्विगु समास है । इस समासका साधारण लक्षण यही है, इस लिये यह समास पहचानना अति सुगम है और इसका बनाना भी सुगम है ।

इस समासके दो भेद हैं - १ एकवद्भावी द्विगुसमास और २ अनेकवद्भावी द्विगु समास ।

एकवद्भावी द्विगुसमास ।

१ त्रिशृंगं =(त्रयाणां शृंगाणां समाहारः)=तीन सींगोंका समूह।
२ पंचगवं =(पंचानां गवां समाहारः)=पांच गौओंका समूह।
३ पंचमूली=(पंचानां मूलानां समाहारः)=पांच मूलोंका समूह।
४ सप्तफली=(सप्तानां फलानां समाहारः)=सात फलोंका समूह।
५अष्टाध्यायी=(अष्टानां अध्यायानां समाहारः) - आठ अध्यायों का समूह ।

अनेकवद्भावी द्विगुसमास ।

१ सप्तर्षयः = (सप्त च ते ऋषयश्च) = सात ऋषि ।
२ चतुर्दिशः = (चतस्रः च ता दिशः) = चार दिशाएं ।
३ त्रिलोकाः = (त्रयः च ते लोकाः) = तीन लोक ।

इस प्रकारके ये द्विगु समास हैं और ये अत्यंत सुगम हैं । जिनके प्रारंभमें संख्यावाचक शब्द है उनको द्विगु समास

समझना और उसको पूर्वोक्त प्रकार खोलना चाहिये ।

वाचनपाठः ।

१ अभियाय च तं इंगुदीवृक्षं सभार्यः सलक्ष्मणः रामः रथात् अवातरत् । तत्र गुहः नाम निषादराजः तस्य सखा आसीत् । सः अपि रामं आगतं श्रुत्वा अमात्यैः वृद्धैः च परिवृतः तत्र रामं उपगतः । चीरवस्त्रधारी रामः सायंसंध्यां तत्र उपास्य लक्ष्मणेन आनीतं केवलं जलं एव भोजनार्थं आददे । वृक्षं आश्रित्य तत्रैव लक्ष्मणः तस्थौ । धनुर्धरः गुहः अपि सूतेन सह तत्रैव स्थितः । प्रभातायां शर्वर्यां रामः उवाच–" तराम जाह्नवीं " इति । रामलक्ष्मणौ सीतया सह गंगां जग्मतुः । तं प्राञ्जलिः सूतः धर्मज्ञं रामं उवाच– " किं अहं इदानीं करवाणि " इति । रामः तं प्रत्युवाच " राजानं अभिवाद्य ब्रूयाः । न अहं न च लक्ष्मणः अनुशोचति वनवासम् । चतुर्दशवर्षेषु निवृत्तेषु नः सर्वान् पुनरागतान् द्रक्ष्यसे " इति ।

जाकर उस इंगुदी वृक्षके पास पत्नीके साथ तथा लक्ष्मण के साथ राम रथसे उतर गया । वहां गुह नामक निषादोंका राजा उसका मित्र था । वह भी राम आया सुन कर मंत्रियों और वृद्धोंसे घेरा हुआ वहां रामके पास गया । वल्कल धारी रामने सायंसंध्या की वहां उपासना करके लक्ष्मणने लाया

हुआ केवल जलही भोजनके लिये लिया। वृक्ष का आश्रय करके वहां ही लक्ष्मण खडा रहा। धनुर्धारी गुह भी सूत के साथ वहां ही रहा। प्रभात काल होते ही राम बोला कि "पार होंगे गंगाके"। राम लक्ष्मण सीताके साथ वहां गंगाके पास गये। हाथ जोड सूत धर्म जानने वाले राम से बोला कि "क्या मैं अब करूं" रामने उसे उत्तर दिया-राजाको प्रणाम करके बोल कि न मैं और न लक्ष्मण वनवास का शोक करते हैं। चौदह वर्ष व्यतीत होनेपर हम सब को पुनः आये देखोगे॥

२ "हे सुमंत्र! राजानं मातरं कैकेयीं अन्याश्च देवीः पुनः पुनरुक्त्वा, अथ कौसल्यां सीताया मम लक्ष्मणस्य च वचनात् आरोग्यं पादाभिवंदनं च ब्रूहि। कथय च। नाभि भविष्यति त्वां दुःखं अस्मत्संतापजम्। भरतश्च अपि वक्तव्यः यथा राजनि वर्तसे तथा सर्वासु मातृषु अविशेषतः वर्तेथाः।" एवं सूतं पुनः पुनः सांत्वयित्वा पश्चात् गुहं वचनं अब्रवीत्—"हे गुह! इदानीं सजने वने मे वासः न योग्यः। अतः आनय न्यग्रोधक्षीरं। इति। गुहः च राजपुत्राय तत् क्षिप्रं क्षीरं उपाहरत्। रामः अपि तेन जटाः अकरोत्। नदीतीरे स्थितां नावं दृष्ट्वा तत्र पूर्वं सीतां आरोप्य ततः स्वयं सलक्ष्मणः आरुरोह। ततः सा शुभा नौका शीघ्रं सलिलं अत्यगात्। अन्यं तीरं संप्राप्य

ते सर्वे नावं हित्वा प्रातिष्ठन्त । रामः तदा लक्ष्मणं आह- सौमित्रे ! त्वं अग्रतः गच्छ, सीता त्वां अनु गच्छतु । अहं सीतां अनुपालयन् पृष्ठतः गच्छामि। अस्माभिः अन्योऽन्यस्य रक्षा कर्तव्या । वनवासस्य दुःखं वैदेही अद्य वेत्स्यति ।

हे सुमंत्र ! राजासे, मातासे, कैकेयीसे, तथा अन्य देवियोंसे पुनः पुनः पूछकर और कौसल्याको सीताके मेरे तथा लक्ष्मण के वचनसे कुशल पूछकर चरणवंदन कह । और कह । नहीं अधिक होगा तुझे दुःख हमारे कारण । भरतसे भी कह कि जैसा राजाके साथ बर्ताव करता है वैसा ही विशेषता छोडकर सब माताओंसे बर्ताव कर । इस प्रकार सूतको पुनः पुनः शांत कर पश्चात् गुहसे भाषण बोला--हे गुह ! अब मनुष्योंसे युक्त वन में रहना मेरे लिये योग्य नहीं । मनुष्य रहित वनमें ही वास अवश्य करना है। इस लिये बडका दूध लाओ । गुहने राजपुत्र के लिये शीघ्रही (बडका) दूध ला दिया । रामने भी उससे जटाएं कीं । नदी तीरपर ठहरी नांव देखकर वहां पहले सीताको चढाकर पश्चात् स्वयं लक्ष्मणके साथ चढ लिया। पश्चात् वह उत्तम नौका शीघ्रही जलमें जाने लगी। दूसरे पारको प्राप्त हो कर वे सब नौका को छोडकर चलने लगे। राम तब लक्ष्मण से बोला-हे लक्ष्मण! तू आगे जा, सीता तेरे पीछे जावे । मैं सीताका पीछे से

पालन करता हुआ पीछे से चलूंगा। हमने एक दूसरेकी रक्षा करनी है। वनवास का दुःख सीता आज जानेगी।

३ रामः तां रात्रीं भरद्वाजाश्रमे सुखं अवसत। प्रातः उत्थाय महर्षिं अभिवाद्य तौ अग्रे जग्मतुः। महर्षिश्च तेषां स्वस्त्ययनं चकार। तान् राज्ञः औरसान् पुत्रान् प्रस्थितान् प्रेक्ष्य चित्रकूटस्य रम्यं पंथानं आदिश्य, महर्षिः न्यवर्तत्। कालिंदीं नदीं आसाद्य सद्यः तितीर्षवः चिंतां आपेदिरे। ततः तौ रामलक्ष्मणौ काष्ठसंघाटं सुमहाप्लवं चक्रतुः। लक्ष्मणः सीतायाः सुखं आसनं चकार। तत्र रामः लज्जमानां तां सीतां प्लवं प्रथमं अध्यारोपयत्। पश्चात् स्वयं लक्ष्मणेन सह आरुह्य, प्लवं उत्सृज्य, अग्रे अगच्छत्।

राम उस रात्रीके समय भरद्वाजके आश्रम में सुख से रहा। प्रातः उठकर महर्षिको प्रणाम कर वे (दो) आगे चलने लगे। महर्षिने भी उनका (स्वस्त्ययन) शुभ गमन होनेकी प्रार्थना की। उन राजाके औरस पुत्रोंको जाते देख, चित्रकूट का रमणीय मार्ग बता कर महर्षि लौट आये। कालिंदी नदी को प्राप्त हो तत्काल तैरने की इच्छा करनेवाले चिंताको प्राप्त हुए। पश्चात् वे राम लक्ष्मण लकडीयोंको जोड बडा बेडा करने लगे। लक्ष्मणने सीता के लिये सुख कारक आसन बनाया। वहां रामने लज्जा करनेवाली उस सीताको पहले चढाया।

पश्चात् स्वयं लक्ष्मण के साथ चढकर, बेडा छोड, आगे चले।

समास।

१ सभार्यः– भार्यया सहितः । २ सलक्ष्मणः– लक्ष्मणेन सहितः। ३ निषादराजः– निषादानां राजा । ४ चीर वस्त्रधारी– चीरं च वस्त्रं च चीरवस्त्रे, चीरवस्त्रे धारयति इति चीरवस्त्रधारी । ५ धनुर्धरः– धनुः धारयति इति । ६ रामलक्ष्मणौ–रामश्च लक्ष्मणश्च । ७ वनवासः– वने वासः । ८ चतुर्दशवर्षाणि –चतुर्दश च तानि वर्षाणि च । ९ पादाभिवंदनं– पादयोः अभिवंदनम् । १० अस्मत्संतापजं– अस्माकं संतापः अस्मत्संतापः,अस्मत्संतापात् जातम् । ११ सजनं--जनेन सहितं । १२ निर्जनं– निर्गतः जनः यस्मात् । १३ राजपुत्रः– राज्ञः पुत्रः । १४ नदीतीरं— नद्याः तीरं । १५ भरद्वाजाश्रमः— भरद्वाजस्य आश्रमः ।

द्वंद्वसमास = रामलक्ष्मणौ, चीरवस्त्रे ।
द्विगु ,, = चतुर्दशवर्षाणि ।

इसी रीतिसे निम्न समासोंको खोलनेका यत्न कीजिये –

१ सपुत्रः । सामित्रः । सवस्त्रः । सनेत्रः । सजलः ।
२ मनुष्यराजः । पशुपतिः । वनचरराजः। नक्षत्रेशः ।
३ शस्त्रधारी । अग्निधारी । वस्त्रधारी । कुशधारी ।
४ गृहवासः । जलनिवासः । कूपवासः । वृक्षनिवासः ।

पाठ ३

तत्पुरुष समास ।

तत्पुरुष समासके आठ प्रकार हैं । १ प्रथमातत्पुरुष । २ द्वितीयातत्पुरुष । ३ तृतीयातत्पुरुष । ४ चतुर्थीतत्पुरुष । ५ पंचमीतत्पुरुष । ६ षष्ठीतत्पुरुष । ७ सप्तमीतत्पुरुष । ८ नञ्तत्पुरुष ।

इनके उदाहरण देखिये—

१ प्रथमातत्पुरुषः ।

१ मध्याह्नः – (मध्यः अह्नः)— मध्य दिन ।
२ मध्यरात्रः —(मध्यः रात्रेः) – मध्य रात्री ।
३ प्राप्तजीविकः--(प्राप्तः जीविकां) -जीविकाको प्राप्त ।

२ द्वितीयातत्पुरुष ।

१ ग्रामगतः— (ग्रामं गतः) ग्रामको गया हुआ ।
२ सुखप्राप्तः —(सुखं प्राप्तः)–सुखको प्राप्त ।
३ दुःखातीत —(दुःखं अतीतः) दुःख से परे ।

३ तृतीयातत्पुरुषः ।

१ मातृसदृशः– (मात्रा सदृशः)-- माताके सदृश ।
२ पितृसमः -- (पित्रा समः)--पिताके समान ।
३ गुडसंमिश्रितः--(गुडेन संमिश्रितः)गुडसे मिश्रित ।
४ शस्त्राच्छिन्नः– (शस्त्रेण छिन्नः) शस्त्रसे छिन्नामिन्न ।

४ चतुर्थीतत्पुरुषः ।

१ यूपदारु – (यूपाय दारु) – यूपके लिये लकडी ।
२ मुद्रिकासुवर्णं–(मुद्रिकायै सुवर्णं)–अंगुठीके लिये सुवर्ण ।
३ भूतबलिः – (भूतेभ्यः बलिः) – प्राणियोंके लिये अन्न।

५ पंचमीतत्पुरुषः ।

१ सिंहभयं — (सिंहात् भयं) — सिंहसे डर ।
२ स्वर्गभ्रष्टः— (स्वर्गात् भ्रष्टः) — स्वर्गसे भ्रष्ट ।
३ दुःखमुक्तः-- (दुःखात् मुक्तः) — दुःखसे मुक्त ।

६ षष्ठीतत्पुरुषः ।

१ राजपुरुषः — (राज्ञः पुरुषः) – राजाका पुरुष ।
२ वृक्षमूलं – (वृक्षस्य मूलं) – वृक्षका मूल ।
३ पृथिवीपतिः— (पृथिव्याः पतिः) – पृथ्वीका स्वामी ।
४ धर्मग्रंथः – (धर्मस्य ग्रंथः) — धर्मका ग्रंथ ।
५ देवपूजकः — (देवस्य पूजकः) – देवका पूजक ।

७ सप्तमीतत्पुरुषः ।

१ व्यवहारधूर्तः – (व्यवहारे धूर्तः) – व्यवहारमें धूर्त ।
२ विद्याप्रवीणः – (विद्यायां प्रवीणः) – विद्यामें प्रवीण ।
३ कलानिपुणः – (कलासु निपुणः) – कलाओंमें निपुण ।
४ वाक्पटुः — (वाचि पटुः) — भाषणमें प्रवीण ।

८ नञ्तत्पुरुषः ।

१ अब्राह्मणः – (न ब्राह्मणः) – ब्राह्मणसे भिन्न ।
२ अविद्वान् – (न विद्वान्) – विद्वानसे अन्य ।
३ अशक्तः – (न शक्तः) – समर्थ नहीं ऐसा ।

पाठक इतने तत्पुरुष समासों के रूप देख कर जान सकते हैं कि प्रथमा द्वितीया आदि विभक्तियोंके प्रत्यय समास खोलनेके समय लग जानेके कारण ही उक्त समासों को प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष आदि नाम प्राप्त हुए हैं।

नञ्तत्पुरुषके समय नकारका अर्थ बताने वाला अकार समासके प्रारंभमें लगता है।

इतनी बातें ध्यानमें धरनेसे पाठक तत्पुरुष समासको पहचान सकते हैं। अब थोडा पाठ पढिये—

वाचनपाठः ।

रामः सीतां अब्रवीत् -वैदेहि ! सर्वान् नगान् पुष्पितान् पश्य । नरैः अनुपसेवितान् फलपुष्पैः च अवनतान् बिल्वान भल्लातकान् पश्य । नूनं अत्र वयं शक्ष्याम आजीवितुम् । एष कोकिलः कूजति । शिखी तं प्रतिकूजति । पश्य इमं रम्यं चित्रकूटं यस्य काननेषु रंस्यामहे । इति । रम्यं चित्रकूटं आसाद्य तत्र वाल्मीकिं अभिवाद्य उपविविशुः । महर्षिः तान् पूज-

यामास। ततः रामः लक्ष्मणं अब्रवीत्,लक्ष्मण ! क्षचिरं आवसथं कुरुष्व इति। लक्ष्मणः अपि पर्णशालां चक्रे। रामः स्नात्वा देवयजनं अकरोत्। विवेश च पर्णशालां। रम्यं चित्रकूटं, माल्यवतीं नदीं च आसाद्य राघवः ननन्द। पुरविप्रवासस्य दुःखं जहौ च।

राम सीतासे बोला—हे सीते! सब पर्वत पुष्पयुक्त हुए देख। मनुष्योंद्वारा असेवित होनेसे फलों और फूलोंसे नमे हुए बिल्व और भिलावे देख। निश्चय से यहां हम आजीविका के लिये समर्थ होंगे। यह कोकिल शब्द करता है। मोर उसे जबाब देता है। देख इस रमणीय चित्रकूट को जिसके जंगलोंमें (हम) रममाण होंगे। ऐसा। रमणीय चित्रकूट को प्राप्त होकर वहां वाल्मीकि ऋषिको प्रणाम कर (वे)बैठ गये। महर्षिने उनकी पूजा की। तब राम लक्ष्मण से बोला, हे लक्ष्मण ! उत्तम घर बना। लक्ष्मणने भी पर्णशाला बनाई रामने स्नान कर देवोंका यज्ञ किया। और प्रवेश किया पर्णशालामें ! रमणीय चित्रकूट और माल्यवती नदी को प्राप्त होकर राम आनंदित हुआ। और नगर से बाहर होने का दुःख दूर फेंक दिया।

समास।

१ अनुपसेवितः– न उपसेवितः। २ फलपुष्पे– फलं च पुष्पंच।

पाठ ४

अथ सुमंत्रः दुर्मना भूत्वा, निरानंदां अयोध्यां प्रययौ। आभिधावन्तः सहस्रशः नराःसुमंत्रं अभ्यद्रवन् पृच्छन्तः च"क्व राम" इति। सीतारामलक्ष्मणाः गंगापारं गताः इति विज्ञाय च "हा राम, हा राम" इति विचुक्रुशुः। स वातायनगतानां स्त्रीणां च परिदेवनां शुश्राव। राजवेश्म प्रविश्य आतुरं राजानं अपश्यत्। यथोक्तं रामवचनं राजानं प्रणिपत्य प्रत्यवेदयत्। राजा तु तत् श्रुत्वा मूर्च्छितः भूत्वा भूमौ न्यपतत्। सर्वं अंतःपुरं तदा आविद्धम्। रामे वनं प्रव्राजिते अथ षष्ठीं रजनीं अर्धरात्रे राजा पुनः पूर्वं कृतं दुष्कृतं अस्मरत्। कौसल्यां च अब्रवीत्। देवि! यदा त्वं अनूढा अभवः अहं च युवराजः। तदा प्रावृट् समयः प्राप्तः। अतिसुखे तस्मिन् काले सरयूं नदीं अहं अन्वगाम्। यद् अहं रात्रौ निपाने अभ्यागतं महिषं गजं मृगं वा हन्तुं लभेय इति। अंधकारे तु तदा वारणस्य इव जले नर्दतः घोषं अश्रौषम्। ततः गजप्रेप्सुः दीप्तं शरं उद्धृत्य अपातयम्। तदा कस्य अपि व्यक्ता वाक् प्रादुरासीत् "कथं मद्विधस्य ऋषेः वधः विधीयते। न अहं मम जीवितक्षयं अनुशोचामि। अपि तु

मातरं च पितरं च अनुशोचामि ।"श्रुत्वा तां करुणां वाचं व्यथितस्य मे कराभ्यां सशरं चापं भुवि अपतत्। दुर्मनाः तं देशं गत्वा तत्र इषुणा हतं तापसं अपश्यम् । स तापसः मां उवाच । "मम पितुः अयं आश्रमः, इतः स्थानात् एकपदी एव केवलम् । त्वं तत्र गच्छ तं प्रसाद्य च । संकुपितः सः त्वां न शपेत् । मां च विशल्यं कुरु।"ततः अहं बाणं उद्हरम् । स तपोधनः सद्यः प्राणान् जहौ । अहं अपि यथा आख्यातं जलपूर्णं घटं आदाय आश्रमपथं गतः । तत्र अहं अपश्यं तस्य वृद्धौ अंधौ च पितरौ। मम पदशब्दं श्रुत्वा एव मुनिः अभाषत, " किं पुत्र चिरयसि ? आनय क्षिप्रं पानीयम् । कथं न अभिभाषसे? " इति । तदा मया तस्य पुत्रस्य मरणं निवेदितम्। असौ तदा उवाच माम्। " नय नौ तं एव देशं तथाविधं पुत्रं द्रष्टुं इच्छावः।" तत अहं एकः सभार्यं मुनिं तत्र नीत्वा पुत्रं अस्पर्शयम् । तौ पुत्रं स्पृष्ट्वा अस्य शरीरे निपेततुः। स मुनिः शोकसंतप्तः तदा मां आह-"हे राजन् ! मे शापात् त्वं एवं पुत्रशोकेनैव कालं गमिष्यसि ।" एवं मां शापं दत्त्वा तत् मिथुनं स्वर्गं अगात्। अद्य तत् पापं मया इदानीं स्मृतम् । तस्य पापकर्मणः एव अयं विपाकः ।

अब सुमंत्र दुःखी होकर आनंद रहित अयोध्याको चला। दौड़ते हुए सहस्रों मनुष्य सुमंत्रके पास दौडे और पूछने लगे कि "कहां हैं राम ?" ऐसा। सीता राम और लक्ष्मण गंगाके पार गये ऐसा जान कर "हा राम हा राम" ऐसा रोने लगे। उसने खिडकियों में गई स्त्रियोंका भी रोना सुना। राज घरमें प्रविष्ट हो दुखी राजाको देखा। जैसा कहा था (वैसा) रामका भाषण राजासे प्रणाम कर कहा। राजा तो उसे सुन भूमिपर गिरा। सब अंतःपुर तब दुखी हुआ। राम वनको भेजजानेपर छठी रात्रीको अर्धरात्रीके समय फिर पूर्व-समय किया हुआ दुष्कर्म स्मरण किया। और कौसल्यासे बोला। हे देवि ! जब तू अविवाहित थी और मैं युवराज था। तब वर्षाकाल प्राप्त हुआ था। अति सुखदायक उस कालमें सरयू नदीपर मैं गया। (इसलिये) कि मैं रात्रीके समय पानी पीने के लिये आये हुए भैसे, हाथी या हिरन को मारने के लिये ग्राप्त करूं। अंधकारमें तो तब हाथी के जैसा जलमें शब्द का आवाज सुना। तब हाथी की इच्छा करनेवाले (मैंने) तेज बाण उठाकर छोड दिया। तब किसकी भी स्पष्ट वाणी मैंने सुन ली। "कैसे मेरे जैसे ऋषिका वध किया-जाता है। नहीं मैं अपने जीवित के नाशके लिये शोक करता हूं, परंतु माता और पिताके लिये शोक करता हूं।" सुन कर वह करुणामयी वाणी, दुखी हुए मेरे हाथोंसे बाण सहित

धनुष्य भूमिमें गिरगया । दुखी बन उस देशको जा वहां बाण से ताडित तापसीको देखा । वह तापस मुझसे बोला– "मेरे पिताका यह आश्रम इस स्थानसे एक कदम ही केवल है । तू वहां जा और उसे प्रसन्न कर । क्रोधित होनेपर वह तुझे शाप न दे । मुझे शल्यरहित कर " तब मैंने (उसके शरीरसे) बाण निकाला । उस तपस्वीने उसीक्षण प्राण छोड दिये । मैंने भी जैसा कहा था जल का घडा लेकर आश्रमके मार्गसे गया। तब मैंने देखा उसके दोनों अंधे माता पिताको । मेरे पांव-का शब्द सुनकर ही मुनिने भाषण किया–" क्यों पुत्र ! देरी करता है ? ला जलदी पानी । कैसे नहीं बोलते हो?" ऐसा । तब मैंने उसके पुत्रका मरण सुनाया। वह तब बोला मुझसे "ले जा हम (दोनों को उसी देश) को, वैसे पुत्र को देखनेकी इच्छा करते हैं ।" तब मैं अकेलेने पत्नीके समेत मुनिको वहां लेकर पुत्रसे स्पर्श कराया । वे (दोनों) पुत्रसे स्पर्श कराकर इसके शरीरमें गिरे। वह मुनि शोकसे संतप्त तब मुझे बोला - "हे राजा ! मेरे शापसे तू इसी प्रकार पुत्र शोकसे मृत्युको प्राप्त करेगा । " इस प्रकार मुझे शाप देकर वह जोडा स्वर्ग को गया । आज उस पापको मैंने अब स्मरण किया। उस पापकर्म का ही यह परिणाम है । "

समास ।

द्वन्द्व समास — सीतारामलक्ष्मणाः (सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च)

तत्पुरुष — [नञ्तत्पुरुष] = १ अयोध्या (न योध्या) २ अनूढा (न ऊढा) ॥ [तृतीया तत्पुरुष] = १ शोक-संतप्तः (शोकेन संतप्तः) ॥ [षष्ठीतत्पुरुष] = १ गंगा-पारः । (गंगायाः पारः) । २ राजवेश्म (राज्ञः वेश्म) । ३ रामवचनं (रामस्य वचनं) । ४ जीवितक्षयः (जीवितस्य क्षयः) ॥ ५ पदशब्दः (पादयोः शब्दः) । ६ पुत्रशोकः (पुत्रस्य शोकः) ॥ [सप्तमीतत्पुरुष] = १ वातायनगता (वातायने गता)

१ पर्णशाला – पर्णानां शाला । २ देवयजनं– देवानां यजनं । ३ पुरविप्रवासः- पुरात् वि-प्रवासः ।

निम्न लिखित समासोंको खोलने का यत्न कीजिये–

द्वंद्वसमास – फलपुष्पे ।
नञ्तत्पुरुष – असेवितः ।
तृतीयातत्पुरुष–हरिकृतः ।
चतुर्थीतत्पुरुष–जनहितम् ।
पंचमीतत्पुरुष – नगरविप्रवासः ।
षष्ठीतत्पुरुष – पत्रशाला । देवयजनं ।

पाठ ५

बहुव्रीहि समास ।

बहुव्रीहि समास के मुख्य सात भेद हैं। १ द्विपद बहुव्रीहि २ बहुपदबहुव्रीहिः, ३ संख्योत्तरपद बहुव्रीहिः, ४ संख्योभयपद बहुव्रीहिः, ५ सहपूर्वपद बहुव्रीहिः, ६ व्यतीहारलक्षणो बहुव्रीहिः, ७ दिगंतरालालक्षणो बहुव्रीहिः ।

द्विपद बहुव्रीहि के भी फिर छः भेद हैं। इनके उदाहरण ये हैं—

१ द्वितीया बहुव्रीहिः ।

१ प्राप्तोदकः = प्राप्तं उदकं यं सः प्राप्तोदकः (ग्रामः) = जिसे उदक प्राप्त हुआ है ऐसा ग्राम ।

२ आरूढवानरः = आरूढः वानरः यं (वृक्षं) स आरूढवानरः (वृक्षः) = जिसपर वानर चढा है वह वृक्ष ।

२ तृतीया बहुव्रीहिः ।

१ निर्जितकामः = निर्जितः कामः येन स निर्जितकामः (शंकरः) = काम पराजीत किया है जिसने वह ।

२ प्राप्तविद्यः = प्राप्ता विद्या येन । = प्राप्त की है विद्या जिसने ।

३ जितशत्रुः = जिताः शत्रवः येन । = पराजित किये हैं शत्रु जिसने ।

३ चतुर्थी बहुव्रीहिः ।

१ उपनीतभोजनः = उपनीतं भोजन यस्मै । = पास रखा है भोजन जिसके लिये ।

२ उपहृतधान्यः = उपहृतं धान्यं यस्मै । = लाया है धान्य जिसके लिये ।

४ पंचमी बहुव्रीहिः ।

१ निष्क्रांतजनः = निष्क्रांतः जनः यस्मात् । = चला गया है मनुष्यमात्र जहांसे (वह ग्राम) ।

२ उद्धृतौदनं = उद्धृतः ओदनः यस्मात् । = उठा लिया है चावल जिससे (वह बर्तन) ।

३ समाप्तजलः = समाप्तं जलं यस्मात् । = समाप्त हुआ है जल जिससे (ऐसा कूआ ।

५ षष्ठी बहुव्रीहिः ।

१ शुक्लपटः = शुक्लः पटः यस्य । = श्वेत है वस्त्र जिसका ।

२ निलांबरः = नीलं अंबरं यस्य । = नीला है वस्त्र जिसका ।

३ लंबकर्णः = लंबौ कर्णौ यस्य । = लंबे हैं कान जिसके (वह गधा) ।

६ सप्तमी बहुव्रीहिः ।

१ वीरपुरुषः = वीराः पुरुषाः यस्मिन् । = वीर हैं

पुरुष जिसके (ऐसा ग्राम) ।

२ संचितजलं = संचितं जलं यास्मिन् । = इकट्ठा किया है जल जिसमें (ऐसा पात्र ।)

३ बहुजनः = बहवः जनाः यास्मिन् । = बहुत हैं लोग जिसमें (ऐसा नगर ।)

ये " द्विपद बहुव्रीहि " के उदाहरण हैं । बहुव्रीहि में विलक्षणता यह है कि जो पद उस समास में रहते हैं उनसे भिन्न ही अन्य पदार्थका बोध उन शब्दोंसे होता है । जैसा " पीतांबरः " शब्द है = (पीतं अंबरं यस्य) (पीतं) पीला है (अंबरं) वस्त्र जिस का वह पुरुष (कृष्ण, विष्णु आदि) पीतांबर शब्दसे बोधित होता है ।

यह विशेषता पाठक स्मरण रखें और पूर्वोक्त समासों को पहचाननेका यत्न करें । अब अन्य बहुव्रीहियोंके उदाहरण यहां देते हैं –

बहुपद बहुव्रीहिः समासः ।

पूर्वोक्त द्विपद बहुव्रीहि समासमें केवल दोही पद होते हैं। परंतु इसमें दो से अधिक पद होते हैं और इससे भी समास में दिखाई देनेवाले पदों द्वारा उनसे भिन्न अन्य पदार्थका ही बोध होता है । जैसा —

१ पराक्रमोपार्जितसंपत् = पराक्रमेण उपार्जिता संपद् येन सः पराक्रमोपार्जितसंपद् । = पराक्रम द्वारा प्राप्त

की है संपत्ति जिसने वह (पराक्रमी शूर पुरुष)।

२ बाहुबलनिर्जितशत्रुः = बाहुबलेन निर्जिताः शत्रवः येन सः बाहुबलनिर्जितशत्रुः। अपने बाहुबलसे पराजित किये हैं शत्रु जिसने वह (बली मनुष्य)।

३ अन्यायोपार्जितधनः।=अन्यायेन उपार्जितं धनं येन सः अन्यायोपार्जितधनः। = अन्याय के मार्गसे प्राप्त किया है धन जिनसे वह (पापी मनुष्य)।

इसीप्रकार अन्यान्य उदाहरण पूर्ववत् ही समझने चाहिये। आशा है कि इस रीतिसे इस समासको पाठक पहचानलेंगे। इसमें दो शब्दोंसे अधिक शब्द रहते हैं और सब शब्दोंद्वारा अन्यही पदार्थका बोध होता है।

संख्योत्तरपदबहुव्रीहिः समासः।

इसमें दूसरा पद संख्यावाचक रहता है इसका उदाहरण देखिये –

१ उपदशाः = उप समीपे दशानां संति ये ते उपदशाः। = पास दस (पुरुषों) के हैं जो उनको उपदश कहते हैं।

इसीप्रकार " २ उपविंश, ३ उपशत " आदि संख्योत्तर पद बहुव्रीहि समास होते हैं। इसके पश्चात् देखिये –

संख्योभयपद बहुव्रीहिः।

इसमें दोनों पद संख्यावाचक ही रहते हैं। जैसा –

१ द्वित्राः = द्वौ वा त्रयो वा = (दो वा तीन)
२ द्विदशाः = द्विरावृत्ता दश = (दोवार दस)

इस रीतिसे यह बहुव्रीहि समास होता है। इसके दोनों शब्द संख्या वाचक होते हैं। इसकारण इसकी पहचान अति सुगम है। अब देखिये –

सहपूर्वपद बहुव्रीहिः।

इस बहुव्रीहिमें "सह" साथ इस अर्थवाला शब्द प्रथम स्थानमें रहता है जैसा —

१ सम्मूलः = मूलेन सह वर्तते इति समूलः = मूलके साथ रहनेवाला।

२ सपुत्रः = पुत्रेण सह वर्तते इति = लडकेके साथ रहता है जो।

३ सकेशः = केशैः सह भवति इति = बालोंके साथ होता है जो।

४ सखड्गः = खड्गेन सह अस्ति इति = तलवार के साथ होता है जो।

ये इस प्रकारके समास अतिसुगम हैं क्योंकि इनमें प्रारंभ में "स" या "सह" इस प्रकारके शब्द रहते हैं। अस्तु अब देखिये-

व्यतिहारलक्षणः बहुव्रीहिः।

इसमें उलट, पुलट, क्रम अथवा बदलेका भाव रहता है। इसके उदाहरण ये हैं –

१ केशाकेशि — केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं तत् केशाकेशि । — केशों को पकड पकडकर जो युद्ध होता है वह केशाकेशि है ।

२ दण्डादण्डि — दण्डैः दण्डैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं तत् दण्डादण्डि — लाठियों और सोटियोंसे प्रहार कर यह युद्ध हुआ, इसलिये उसका नाम दण्डादंडि है ।

अब एक बहुव्रीहि शेष है उसका नाम है —

दिगन्तराललक्षणः बहुव्रीहिः ।

इसमें दिशाओंका अवकाश बताया जाता है जैसा —

दक्षिणपूर्वा — दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोः यत् अंतरालं सा दक्षिणपूर्वा । — दाक्षिण और पूर्व दिशाओं में जो अवकाश है उसका नाम " दाक्षिणपूर्वा" है ।

ये सब समास सुगम हैं और पाठक यदि इस पाठका अभ्यास विचार और मनन पूर्वक करेंगे तो उनको बहुव्रीहि समासका ज्ञान इतने से ठीक प्रकार हो सकता है और उनको कोई कठिनता नहीं रहेगी ।

संस्कृत भाषामें बहुव्रीहि समासका उपयोग बहुत होता है । प्रयोग की दृष्टिसे तत्पुरुष समास और बहुव्रीहि समासही बहुत प्रयुक्त होते हैं । इस लिये पाठकोंको उचित है कि वे इनका उत्तम अध्ययन करें और संस्कृत भाषाके मन्दिरमें सुगमतासे प्रविष्ट हों ।

पाठ ६

इस पाठमें पूर्व पाठोंमें दी हुई रामायणकी कथा का संधियुक्त सरल संस्कृत दिया जाता है। यदि पाठकोंके पूर्व पाठ बन गये हों तो इस पाठके समझनेमें उनको कोई कठिनता नहीं रहेगी।

१

अभियाय च तमिंगुदीवृक्षं सभार्यः सलक्ष्मणो रामो रथादवातरत्। तत्र गुहो नाम निषादराजस्तस्य सखाऽऽसीत्। सोऽपि राममागतं श्रुत्वाऽमात्यैर्वृद्धैश्च परिवृतस्तत्र राममुपगतः। चीरवस्त्रधारी रामः सायंसंध्यां तत्रोपास्य लक्ष्मणेनाऽऽनीतं केवलं जलमेव भोजनार्थमाददे। वृक्षमाश्रित्य तत्रैव लक्ष्मणस्तस्थौ। धनुर्धरो गुहोऽपि सूतेन सह तत्रैव स्थितः। प्रभातायां शर्वर्यां राम उवाच — "तराम जान्हवीं" इति। रामलक्ष्मणौ सीतया सह गंगां जग्मतुः। प्राञ्जलिः सूतो धर्मज्ञं राममुवाच — "किमहमिदानीं करवाणि" इति। रामस्तं प्रत्युवाच–"राजानमभिवाद्य ब्रूयाः। नाऽहं न च लक्ष्मणोऽनुशोचति वनवासम्। चतुर्दशवर्षेषु निवृत्तेषु नः सर्वान् पुनरागतान्द्रक्ष्यसे" इति॥

" हे सुमंत्र ! राजानं मातरं कैकेयीमन्याश्च देवीः पुनः पुनरुक्त्वा, अथ कौसल्यां सीताया मम लक्ष्मणस्य च वचनादारोग्यं पादाऽभिवंदनं च ब्रूहि॥ कथय च। नाभिभविष्यति त्वां दुःखमस्मत्संतापजम्। भरतश्चाऽपि वक्तव्यो " यथा राजनि वर्तसे तथा सर्वासु मातृष्वविशेषतो वर्तेथाः। " एवं सूतं पुनः पुनः सांत्वयित्वा पश्चाद्गुहं वचनमब्रवीत्-"हे गुह ! इदानीं सजने वने मे वासो न योग्यः। निर्जने वने वासोऽवश्यं कर्तव्यः। अत आनय न्यग्रोधक्षीरम् " इति। गुहश्च राजपुत्राय तत् क्षिप्रं क्षीरमुपाहरत्। रामोऽपि तेन जटा अकरोत्। नदीतीरे स्थितां नावं दृष्ट्वा तत्र पूर्वं सीतामारोप्य ततः स्वयं सलक्ष्मण आरुरोह। ततः सा शुभा नौका शीघ्रं सलिलमत्यगात्। अन्यं तीरं संप्राप्य ते सर्वे नावं हित्वा प्रातिष्ठन्त। रामस्तदा लक्ष्मणमाह-"सौमित्रे! त्वमग्रतो गच्छ,सीता त्वामनुगच्छतु। अहं सीतामनुपालयन् पृष्ठतो गच्छामि। अस्माभिरन्योऽन्यस्य रक्षा कर्तव्या। वनवासस्य दुःखं वैदेह्यद्य वेत्स्यति। "

रामस्तां रात्रीं भरद्वाजाश्रमे सुखमवसत्। प्रातरुत्थाय महर्षिमभिवाद्य तावग्रे जग्मतुः। महर्षिश्च तेषां स्वस्त्ययनं चकार। तान्राज्ञ औरसान्पुत्रान्प्र-

स्थितान्प्रेक्ष्य, चित्रकूटस्य रम्यं पंथानमादिश्य, महर्षिर्न्यवर्तत । कालिंदीं नदीमासाद्य सद्यस्तितीर्षवश्चितामापेदिरे । ततस्तौ रामलक्ष्मणौ काष्ठसंघाटं सुमहाप्लवं चक्रतुः । लक्ष्मणः सीतायाः सुखमासनं चकार । तत्र रामो लज्जमानां तां सीतां प्लवं प्रथममध्यारोपयत । पश्चात्स्वयं लक्ष्मणेन सहारुह्य, प्लवमुत्सृज्य, अग्रेऽगच्छत् ।

२

रामः सीतामब्रवीत् " वैदेहि ! सर्वान्नगान्पुष्पितान्पश्य । नरैरनुपसेवितान्फलपुष्पैश्चाऽवनतान्बिल्वान्भल्लातकान्पश्य । नूनमत्र वयं शक्ष्यामाजीवितुम् । एष कोकिलः कूजति । शिखी तं प्रति कूजति। पश्येमं रम्यं चित्रकूटं यस्य काननेषु रंस्यामहे।" इति। रम्यं चित्रकूटमासाद्य तत्र वाल्मीकिमभिवाद्योपविविशुः । महर्षिस्तान्पूजयामास । ततो रामो लक्ष्मणमब्रवीत् " लक्ष्मण ! रुचिरमावसथं कुरुष्वेति ।" लक्ष्मणोऽपि पर्णशालां चक्रे । रामः स्नात्वा देवयजनमकरोद्विवेश च पर्णशालाम् । रम्यं चित्रकूटं, माल्यवतीं नदीं चासाद्य राघवो ननन्द । पुरविप्रवासस्य दुःखं जहौ च ।

३

अथ सुमंत्रो दुर्मना भूत्वा, निरानंदामयोध्यां प्रययौ। अभिधावन्तः सहस्रशो नराः सुमंत्रमभ्यद्रवन्पृच्छन्तश्च "क्व राम" इति। सीतारामलक्ष्मणा गंगापारं गता इति विज्ञाय च "हा राम हा राम" इति विचुक्रुशुः। स वातायनगतानां स्त्रीणां च परिदेवनां शुश्राव। राजवेश्म प्रविश्याऽऽतुरं राजानमपश्यत्। यथोक्तं रामवचनं राजानं प्रणिपत्य प्रत्यवेदयत्। राजा तु तच्छ्रुत्वा मूर्छितो भूत्वा भूमौ न्यपतत्। सर्वमंतःपुरं तदाऽऽविद्धम्। रामे वनं प्रव्राजितेऽथ षष्ठीं रजनीं अर्धरात्रे राजा पुनः पूर्वं कृतं दुष्कृतमस्मरत्। कौसल्यां चाऽब्रवीत्। देवि! यदा त्वमनूढाऽभवोऽहं च युवराजः। तदा प्रावृट्समयः प्राप्तः। अतिसुखे तस्मिन्काले सरयूं नदीमहमन्वगाम्। यदहं रात्रौ निपानेऽभ्यागतं महिषं गजं मृगं वा हन्तुं लभेयेति। अंधकारे तु तदा वारणस्येव जले नर्दतो घोषमश्रौषम्। ततो गजप्रेप्सुर्दीप्तं शरमुद्धृत्याऽपातयम्। तदा कस्यापि व्यक्ता वाक्प्रादुरासीत्- "कथं मद्विधस्यैर्ववधो विधीयते। नाऽहं मम जीवितक्षयमनुशोचामि। अपि तु मातरं च पितरं चाऽनुशोचामि।" श्रुत्वा तां करुणां वाचं

व्याथितस्य मे कराभ्यां सशरं चापं भुव्यपतत् । दुर्मनास्तं देशं गत्वा तत्रेषुणा हतं तापसमपश्यम् । स तापसो मामुवाच-"मम पितुरयमाश्रम; इतस्था-नादेकपद्येव केवलम् । त्वं तत्र गच्छ तं प्रसाद्य च। संकुपितः स त्वां न शपेत्। मां च विशल्यं कुरु"ततो ऽहं बाणमुद्हरम्। स तपोधनः सद्यःप्राणाञ्जहौ । अ-हमपि यथाख्यातं जलपूर्णं घटमादायाऽऽश्रमपथं गतः। तत्राहमपश्यं तस्य वृद्धावन्धौ च पितरौ। मम पदशब्दं श्रुत्वैव मुनिरभाषत,-" किं पुत्र ! चिरयसि ? आ-नय क्षिप्रं पानीयम्। कथं नाभिभाषसे। इति।" तदा मया तस्य पुत्रस्य मरणं निवेदितम्। असौ तदोवाच माम् । " नय नौ तमेव देशं तथाविधं पुत्रं द्रष्टुमि-च्छावः । " ततोऽहमेकः सभार्यं मुनिं तत्र नीत्वा पु-त्रमस्पर्शयम् । तौ पुत्रं स्पृष्ट्वाऽस्य शरीरे निपेततुः । स मुनिः शोकसंतप्तस्तदा मामाह—"हे राजन् ! मे शापात्त्वमेवं पुत्रशोकेनैव कालं गमिष्यसि ! " एवं मां शापं दत्त्वा तन्मिथुनं स्वर्गमगात् । अद्य तत्पापं मयेदानीं स्मृतम्। तस्य पापकर्मण एवाऽयं विपाकः॥

पाठक इसका अभ्यास विशेष रीतिसे करें और कोई कठि-नता उत्पन्न हुई तो पूर्वपाठ देखें ।

पाठ ७

कर्मधारयसमासः ।

कर्मधारय समासके सात भेद हैं इनके नाम और उदाहरण वहां देते हैं--

१ विशेषणपूर्वपद-कर्मधारयः ।

इस में पहिला शब्द विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जैसा—

१ कृष्णसर्पः— (कृष्णश्च असौ सर्पश्च)= काला सांप

२ नीलवस्त्रं — (नीलं च तत् वस्त्रं च)= नीला वस्त्र ।

३ उष्णजलं — (उष्णं च तत् जलं च)= गर्म जल ।

४ शीतोदकं---(शीतं च तत् उदकं च)=शीत जल ।

इस में क्रमशः " कृष्ण, नील, उष्ण, शीत " ये शब्द गुणबोधक होनेसे विशेषण हैं और ये क्रमशः " सर्प, वस्त्र, जल, उदक " इन शब्दोंके गुण बता रहे हैं इसलिये ये विशेष्य हैं । इस प्रकार इस समास को पहचानना अति सुगम है ।

२ विशेष्यपूर्वपद-कर्मधारयः ।

पूर्वोक्त समास के विरुद्ध अवस्था इसमें होती है । इस में विशेष्य प्रथम होता है और विशेषण आगे रहता है अर्थात् पहिला शब्द विशेष्य और दूसरा विशेषण होता है। और

विशेषणका शब्द पहिले शब्दकी निंदा करनेके लिये प्रयुक्त हुआ होता है जैसा—

१ वीरभीतः = (वीरश्चासौ भीतश्च) =वीर होकर घबडाया हुआ।

२ धनेशार्थहीनः = (धनेशश्च असौ अर्थहीनश्च) धनेश होकर द्रव्यहीन।

ये इसके उदाहरण हैं। इसमें दूसरे शब्दद्वारा पहिले की निंदा हुई है।

२ विशेषणोभयपद–कर्मधारयः।

इसमें दोनों शब्द विशेषण ही होते हैं जैसा–

१ शीतोष्णं (शीतं च तत् उष्णं च) = शीत और उष्ण।

२ कृष्णशुक्लः=(कृष्णश्च असौ शुक्लश्च)= काला और श्वेत।

इस प्रकार के इस समासके उदाहरण हैं। इसमें सब शब्द विशेषणरूप होनेसे इसकी पहचान सुगम है।

४ उपमानपूर्वपद–कर्मधारयः।

इसमें उपमा दर्शानेवाला शब्द प्रथम स्थानमें होता है। इसके उदाहरण ये हैं—

१ शंखपांडुरः— (शंखवत् पांडुरः)= शंखके समान श्वेत।

२ घनश्यामः— (घन इव श्यामः)= मेघके समान श्याम।

३ मेघश्यामः— (मेघ इव श्यामः) = ,, ,, ,,

इसमें पहिला शब्द उपमा दर्शक है।

५ उपमानोत्तरपद-कर्मधारयः ।

इसमें उपमा दर्शक शब्द दूसरे स्थानमें रहता है जैसे —

१ पुरुषव्याघ्रः-(पुरुषः व्याघ्र इव)= वाघके समान पुरुष ।

२ नरसिंहः— (नरः सिंह इव) = सिंहके समान नर ।

इस प्रकारके समासोंमें उपमा दर्शक शब्द दूसरे स्थानमें रहते हैं । यहां पाठक पूर्व समास के साथ इसका भेद देखें और उसका स्मरण रखें ।

६ संभावनापूर्वपद-कर्मधारयः ।

इसके उदाहरण ये हैं—

१ गुणबुद्धिः —(गुण इति बुद्धिः) = गुण जैसी बुद्धि ।

२ पुत्रग्रहणं –(पुत्र इति ग्रहणं) = पुत्र करके ग्रहण करना ।

७ अवधारणापूर्वपद-कर्मधारयः ।

इसके ये उदाहरण हैं-

१ विद्याधनं –(विद्या एव धनं) = विद्या ही धन है ।

२ सुहृद्बन्धुः = (सुहृत् एव बंधुः) = मित्र ही भाई है।

इतने उदारण और इतने भेद देखने से पाठकोंके समझमें यह बात आगई होगी कि अर्थके अनुसार ही समास बनते हैं। और अर्थके अनुसारही समासों की पहचान होती है । यदि किसी को यह ज्ञान नहीं है कि "विद्याधन" का अर्थ क्या है तो वह उस समासको जानही नहीं सकेगा। अर्थात् संस्कृत भाषा के अंदर जैसा जैसा पाठकोंका प्रवेश होता जायगा, वैसा वैसा

उनको समासोंका अधिकाधिक बोध होता जायगा । पाठक यहां स्मरण रखें की यह बात एक दूसरेके आश्रयपर निर्भर है अर्थात् समासोंका ज्ञान होनेसे अर्थज्ञान हो जाता है और अर्थज्ञान होने से भी समासों के खोलने की विधि ज्ञात हो सकती है ।

अब इस पाठमें निम्न लिखित श्लोक पढिये—

स्कंद उवाच ।

मातरो हि भवत्यो मे भवतीनामहं सुतः ।
उच्यतां यन्मया कार्यं भवतीनामभीप्सितम् ॥१५॥
म. भारत. वन. अ. २३०

अन्वयः— हि भवत्यः मे मातरः, अहं भवतीनां सुतः। भवतीनां यथेप्सितं मया यत् कार्यं उच्यताम्।

अर्थ — क्यों कि आप मेरी माताएं हैं, मैं आपका पुत्र हूं । आपको (ईप्सितं) इष्ट जो कार्य मुझे करना हो वह कहिये ।

इन्द्रो दधाति भूतानां बलं तेजः प्रजाः सुखम् ।
तुष्टः प्रयच्छति तथा सर्वान्कामान्सुरेश्वरः ॥ ९ ॥
म. भारत. वन. अ. २२९ ।

अन्वयः — इन्द्रः भूतानां बलं तेजः प्रजाः सुखम् दधाति। तथा सुरेश्वरः तुष्टः सर्वान् कामान् प्रयच्छति।

अर्थः— इन्द्र भूतमात्रके लिये बल, तेज, संतान, सुख धारण करता है, तथा वही सुरोंका ईश्वर इन्द्र संतुष्ट हुआ तो सब मनोरथों को देता है।

ब्रह्म क्षत्रेण संसृष्टं क्षत्रं च ब्रह्मणा सह।
उदीर्णे दहतः शत्रून्वनानीवाग्निमारुतौ ॥ १० ॥
म० भा० वन० २६

अन्वय— ब्रह्म क्षत्रेण संसृष्टं, क्षत्रं च ब्रह्मणा सह संमिलितं, उदीर्णे शत्रून् दहतः, अग्निमारुतौ वनानि इव।

अर्थ— (ब्रह्म) ब्राह्मण लोग (क्षत्रेण) क्षत्रिय लोगोंके साथ मिले हुए, तथा क्षत्रिय लोग ब्राह्मणोंके साथ संमिलित हुए तो, ये दोनों (उदीर्णे) प्रकाशित होकर शत्रुओंको ऐसे जलाते हैं, जैसे अग्नि और वायु मिलकर वनोंको चलाते हैं।

यहां अग्नि शब्द ब्राह्मणका तेज और वायु शब्द क्षत्रियके बलका द्योतक है। वेदमंत्रोंमें अग्नि देवताके मंत्रोंसे ब्राह्मणोंका वर्णन तथा वायुदेवताके मंत्रोंसे क्षत्रियोंका वर्णन हुआ है। इस विषयका अनुसंधान पाठद यहां करें।

समास।

षष्ठीतत्पुरुष – सुरेश्वरः (सुराणां ईश्वरः) – देवोंका राजा



पाठ ८

अव्ययीभावसमासः ।

अव्ययी भाव समास के दो भेद हैं, एक का नाम (१) नामपूर्वपद अव्ययीभाव समास है और (२) दूसरे को अव्ययपूर्वपद अव्ययीभाव समास कहते हैं। इनके उदाहरण ये हैं—

(१) नामपूर्वपद-अव्ययीभाव-समासः ।

इस समासमें पहिला पद नाम होता है और दूसरा अव्यय होता है। देखिये-

१ फलप्रति - (फलस्य मात्रा) = फलका अंश ।

२ शाकप्रति- (शाकस्य मात्रा) साक का प्रमाण ।

इन समासों में पहिला पद " फल अथवा शाक" ये नाम हैं इस लिये इन समासोंका यह नाम है ।

(२) अव्ययपूर्वपद-अव्ययीभाव-समासः ।

इस समासमें पहिला पद अव्यय होता है और दूसरा नाम होता है। इसके उदाहरण ये हैं-

१ उपकुंभं - (कुंभस्य समीपे वर्तते इति) कुंभके पास रहता है ।

२ यथाक्रमं- (क्रमं अनतिक्रम्य वर्तते इति) = क्रमको न छोड कर रहता है ।

३ अनुवनं – (वनस्य समीपं इति)= वनके पास रहता है।

यह समास भाषामें बहुत ही प्रचलित है और स्थान स्थान में इसका प्रयोग होता है। पहचानने के लिये यह अत्यंत सुगम है। किंचितसा ध्यान पाठक देंगे तो उनको इसकी पहचान हो सकती है।

अब इस पाठमें निम्न लिखित श्लोकों का अभ्यास कीजिये—

वैशम्पायन उवाच।

निहते राक्षसे तस्मिन्पुनर्नारायणाश्रमम्।
अभ्येत्य राजा कौन्तेयो निवासमकरोत्प्रभुः ॥१॥

म. भा. वन. अ. १५८

संस्कृत टीका — तस्मिन् राक्षसे असुरे निहते निःशेषेण हते, पुनः पश्चात् कौन्तेयः कुंतीनंदनः प्रभुः राजा युधिष्ठिरः नारायणाश्रमं नारायणस्य आश्रमं प्रति अभ्येत्य आगत्य तत्रैव निवासं वास्तव्यं अकरोत्।

स समानीय तान्सर्वान्भ्रातॄनित्यब्रवीद्वचः।
द्रौपद्या सहितान्काले संस्मरन्भ्रातरं जयम् ॥ २ ॥

स तान् सर्वान् निखिलान् भ्रातॄन् द्रौपद्या सहितान् द्रौपद्या युक्तान् बंधून् समानीय सम्यक् आनीय काले समये भ्रातरं जयं विजयं अर्जुनं संस्मरन् इति वचः अब्रवीत्।

समाश्चतस्रोऽभिगताः शिवेन चरतां वने ।
कृतोद्देशः स बीभत्सुः पंचमीमभितः समाम् ॥३॥

शिवेन सुखेन वने चरतां विचरतां अस्माकं चतस्रः समाः अभिगताः चत्वारि वर्षाणि व्यतीतानि । सः बीभत्सुः अर्जुनः पंचमीं समां पंचमं संवत्सरं वर्षं अभितः सर्वतः कृतोद्देशः कृतः उद्देशः येन सः अस्ति । पंचमे वर्षे आगमिष्यामि इति अर्जुनेन उक्तं अस्ति इति आशयः ।

प्राप्य पर्वतराजानं श्वेतं शिग्वरिणां वरम् ।
पुष्पितैर्द्रुमषण्डैश्च मत्तकोकिलषट्पदैः ॥ ४ ॥
मयूरैश्चातकैश्चापि नित्योत्सवविभूषितम् ।
व्याघ्रैर्वराहैर्महिषैर्गवयैर्हरिणैस्तथा ॥ ५ ॥
श्वापदैर्व्यालरूपैश्च रुरुभिश्च निषेवितम् ।
फुल्लैः सहस्रपत्रैश्च शतपत्रैस्तथोत्पलैः ॥ ६ ॥
प्रफुल्लैः कमलैश्चैव तथा नीलोत्पलैरपि ।
महापुण्यं पवित्रं च सुरासुरनिषेवितम् ॥ ७ ॥
तत्रापि च कृतोद्देशः समागमदिदृक्षुभिः ।
कृतश्च समयस्तेन पार्थनाऽमिततेजसा ॥ ८ ॥
पंचवर्षाणि वत्स्यामि विद्यार्थीति पुरा मयि ।
अत्र गांडीवधन्वानमवाप्तास्त्रमरिंदमम् ॥ ९ ॥
देवलोकादिमं लोकं द्रक्ष्यामः पुनरागतम् ।

इत्युक्त्वा ब्राह्मणान्सर्वानामन्त्रयत पांडवः ॥१०॥

म० भा० वन० अ० १५८

पुष्पितैः द्रुमषण्डैः द्रुमाणां वृक्षाणां षण्डैः खंडैः, मत्तकोकिलषट्पदैः मत्तैः कोकिलैः षट्पदैः भ्रमरैः, मयूरैः चातकैः एतैः पक्षिभिः नित्योत्सवविभूषितम् नित्योत्सव इव विभूषितं शोभितं, व्याघ्रैः वराहैः सूकरैः महिषैः गवयैः हरिणैः तथा अन्यैः व्यालरूपैः भयानकैः श्वापदैः पशुभिः रुरुभिः रुरुनामकैः मृगविशेषैः निषेवितं निःशेषेण यथा भवति तथा सेवितं, फुल्लैः उत्फुल्लैः प्रफुल्लैः सहस्रपत्रैः शतपत्रैः उत्पलैः कमलैः प्रफुल्लैः कमलैः च तथा एव नीलोत्पलैः नीलकमलैः युक्तं, सुरासुरनिषेवितम् सुरैः असुरैः च निषेवितं, पवित्रं शुद्धं, महापुण्यं अतिपुण्यकरं, शिखरिणां शिखरयुक्तानां पर्वतानां वरं श्रेष्ठं, श्वेतं शुभ्रं,पर्वतराजानं पर्वतानां राजानं हिमाचलं प्राप्य, समागमं दिदृक्षुभिः समागमं द्रष्टुं इच्छद्भिः, तत्र अपि कृतोद्देशः कृतवासः अर्जुनस्य समागमं दिदृक्षुभिः अस्माभिः अत्र एव वासः कर्त्तव्यः। तेन अमिततेजसा अपरिमिततेजसा पार्थेन पृथापुत्रेण अर्जुनेन पुरा मयि समयः निश्चयः कृतः यतः विद्यार्थी भूत्वा पंच वर्षाणि वत्स्यामि इति। अत्र एव देवलोकाद् इमं भूलोकं पुनः आगतं अरिन्दमं शत्रुनाशनं अवाप्तास्त्रं प्राप्तास्त्रं गांडीवधन्वानं अर्जुनं द्रक्ष्यामः। इति उक्त्वा पांडवः धर्मराजः सर्वान् ब्राह्मणान् आमंत्रयत स्वसमीपं आमन्त्रितवान्।

तत्पुरुषसमासाः ।

१ पर्वतराजा = पर्वतानां राजा । २ सुरासुरनिषेवितः = सुरासुरैः निषेवितः। ३ देवलोकः = देवानां लोकः। ४ द्रुमषंडाः =द्रुमाणां षंडाः ।

द्विगुसमासः ।

१ पंचवर्षाणि = पंच च तानि वर्षाणि ।

द्वंद्वसमासौ ।

१ कोकिलषट्पदाः = कोकिलाश्च षट्पदाश्च ।

२ सुरासुराः = सुराश्च असुराश्च ।

बहुव्रीहिसमासाः ।

१ कृतोद्देशः=कृतः उद्देशः येन।२ अमिततेजाः=अमितं तेजः यस्य । ३ अवाप्तास्त्रं = अवाप्तानि अस्त्राणि येन । ४ शतपत्रं =शतानि पत्राणि यस्य। ५ सहस्रपत्रं = सहस्राणि पत्राणि यस्य।

कर्मधारयसमासौ ।

१ मत्तकोकिलषट्पदाः = मत्ताः च ते कोकिलषट्पदाः । २ नीलोत्पलं = नीलं च तत् उत्पलं च ।

पाठक इन समासोंका उचम अभ्यास करें। स्वयं इस प्रकार इन समासोंको खोलनेका यत्न करें। समास किस रीतिसे बनते हैं और किस रीतिसे खोले जाते हैं इस बातका सूक्ष्मरीतिसे विचार करके पाठक इस समास प्रकरणका अध्ययन करेंगे तो उनको आगे जाकर कोई कठिनता नहीं होगी ।

पाठ ९

१ एकशेषसमासः ।

कई समास ऐसे हैं कि जिनके शब्दोंमेंसे एकही शब्द अवशिष्ट रहता है । इसका नाम एकशेष समास है। इसके उदाहरण ये हैं—

१ हंसौ = (हंसी च हंसश्च) = हंसी और हंस पक्षी ।
२ भ्रातरौ = (भ्राता च श्वसा च) = भाई और बहिन ।
३ पुत्रौ = (पुत्रश्च दुहिता च) = पुत्र और पुत्री
४ पितरौ = (माता च पिता च) = माता और पिता ।

इस प्रकारके प्रयोग संस्कृत में बहुत आते हैं । संस्कृत पुस्तकें पढतें पढते पाठक इसके साथ परिचित हो सकते हैं। ये समास बहुत सुगम हैं और इनमें किसी प्रकार भी कठिनता नहीं है ।

२ अलुकसमासः।

पाठकोंने यह ध्यानसे देखा होगा कि इस समयतक जितने समास दिये गये हैं उनमें समास के अंदर के विभक्ति प्रत्यय का लोप हुआ है जैसा " सूर्यस्य किरणः " इस के " स्य " प्रत्ययका लोप होकर " सूर्यकिरणः" ऐसा समास बनता है। ऐसाही हरएक प्रकारके समासमें होता है, अर्थात् समास बनने के लिये बीचके प्रत्ययोंका लोप होना आवश्यक ही है ।

परंतु अब ऐसे समास दिये जाते हैं कि जिनके मध्यके प्रत्यय का लोप नहीं होता। इसके उदाहरण अब देखिये—

१ दिविजः = (दिवि जातः) = द्युलोकमें उत्पन्न ।
२ युधिष्ठिरः = (युधि स्थिरः) = युद्धमें स्थिर।
३ शरदिजः = (शरदि जायते) = शरद् ऋतुमें उत्पन्न
४ मातरिश्वः = (मातरि श्वियते) = माताके अंदर रहता है।
५ जनुषान्धः = (जनुषा अन्धः) = जन्मसे अंध।
६ दूरादागतः = (दूरात् आगतः) = दूरसे आया।

यद्यपि इनके मध्यके विभक्ति प्रत्यय जैसेके वैसे रहते हैं तथापि इनको समासही कहते हैं। पाठक इस समास की इस विशेषताका स्मरण रखें। अब तद्धितवृत्ति का स्वरूप बताते हैं।

३ तद्धितवृत्तिः।

इसको वास्तविक तद्धित प्रत्ययांत शब्दही कहना योग्य है और इसी लिये इनकी गणना पूर्वोक्त मुख्य समासोंमें नहीं की जाती है। गौण दृष्टिसे ही इनको समास भी कहते हैं इनके उदाहरण ये हैं —

१ गुणवान् = (गुणः अस्य अस्ति) = गुण जिसके पास है।
२ धनवान् = (धनं अस्यास्ति) = धन ,, ,, ,,
३ धनी = (,, ,,) = ,, ,, ,, ,,
४ श्रद्धालुः = (श्रद्धा अस्य आस्ति) श्रद्धा ,, ,, ,,

५ दाशरथिः = (दशरथस्य अपत्यं) = दशरथका पुत्र ।
६ आरुणिः = (अरुणस्य ,,) = अरुणका ,,
७ वैनतेयः = (विनतायाः,,) = विनताका ,,
८ पटुतरः –(अतिशयेन पटुः) – अति प्रवीण ।
९ यशस्वी –(यशः अस्य अस्ति) - यश जिसका है
१० तुंदिलः -(प्रशस्तं तुंदं अस्य अस्ति) - बडे पेट वाला ।
११ पटुता -- (पटोः भावः पटुता) -- पटुल, प्रवीणता ।
१२ शैत्यं -- (शीतस्य भावः) -- शीतता ।
१३ मार्दवं -- (मृदोः भावः) -- मृदुता ।
१४ कौशलं -- (कुशलस्य भावः) – कुशलता ।
१५ नैपुण्यं -- (निपुणस्य भावः)- निपुणता ।

इस प्रकारके तद्धितवृत्तिके सेंकडों शब्द संस्कृतमें प्रयुक्त होते हैं इस लिये इनका अभ्यास करना अत्यावश्यक है । इसी प्रकार " उपपदवृत्ति " के भी बहुत प्रयोग होते हैं ।

उपपदवृत्तिः ।

इसमें मूल शब्दके साथ क्रियाका रूप विशेष प्रकारसे बनकर लगता है जैसे---

१ धनदः -- (धनं ददाति) -- धन देनेवाला ।
२ जलदः -- (जलं ददाति) -- जल ,, ,, ।
३ जन्मदः -- (जन्म ,,) -- जन्म ,, ,, ।

४ भूपः -- (भुवं पाति) -- भूमिका पालनेवाला ।
५ भूपालः--(भुवं पालयति) -- ,, ,, ।
६ कुंभकारः -- (कुंभं करोति) -- घडा बनानेवाला. ।
७ शस्त्रकृत् -- (शस्त्रं करोति) -- शस्त्र बनानेवाला.
८ वेदाध्यायी -- (वेदं अधीते) -- वेदका अध्ययन करनेवाला।
९ भूभृत्--(भुवं बिभर्ति)--भूमिका धारण पोषण करनेवाला।

ये उपपद वृत्तिके रूप संस्कृतमें सहस्रशः प्रयुक्त होते हैं, इस लिये इनका अभ्यास आवश्यक है । आगे इन रूपोंके वारंवार देखनेसे पाठक इनको पहचान सकनेकी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं ।

५ कृद्वृत्तिः ।

जिस प्रकार पूर्व स्थानमें "तद्धितवृत्ति" वाले शब्द दिये हैं, उसी प्रकार "कृद्वृत्ति" वाले शब्दभी संस्कृतमें अनंत हैं, उनके कुछ उदाहरण यह दिये जाते हैं-- ।

१ कर्ता -(करोति इति) = करनेवाला ।
२ भर्ता -(बिभर्तीति) = भरण पोषण करने वाला।
३ हर्ता —(हरतीति)= हरण करनेवाला ।
४ गच्छत् -(गच्छतीति)= जानेवाला।
५ कुर्वन् -(करोतीति)= करनेवाला ।
६ पश्यन् -(पश्यतीति)= देखनेवाला ।

७ भोक्तव्यः –(भोक्तुं योग्यः) भोगने योग्य।
८ कर्तव्यः –(कर्तुं योग्यः) = करने योग्य ।
९ दातव्यः –(दातुं योग्यः) = देने योग्य ।
१० जिगमिषा–(गन्तुं इच्छा) = जानेकी इच्छा ।
११ विवक्षा– (वक्तुं इच्छा) = बोलनेकी ,,
१२ पिपासा–(पातुं इच्छा) = पीनेकी ,,
१३ बुभुक्षा– (भोक्तुं इच्छा)–भोगनेकी इच्छा ।
१४ अलंकरिष्णुः –(अलंकर्तुं इच्छुः)– अलंकार पहननेकी इच्छा करनेवाला.
१५ देयं – (दातुं योग्यं)–देने योग्य ।
१६ लेख्यं – (लिखितुं योग्यं) –लिखने योग्य।
१७ गतवान्– (अगमत् इति)– गया हुआ ।
१८ भृत्यः – (भर्तुं योग्यः)–भरण करने योग्य ।
१९ स्तुत्यः– (स्तोतुं ,,)– स्तुति करने योग्य ।
२० सुकरः – (सुखेन कर्तुं योग्यः)–सुखसे करने योग्य ।
२१ दुर्लभः – (दुःखेन लब्धुं ,,)–दुःखसे प्राप्त करने योग्य
२२ दुर्दानं –(,, दातुं ,,)– ,, देने योग्य ।
२३ ग्राही – (गृह्णातीति ग्राही) – जो ग्रहण करता है ।
२४ तितीर्षुः– (तर्तुं इच्छुः) —पार जानेकी इच्छा वाला।
२५ चिकीर्षुः–(कर्तुं इच्छुः) –करनेकी इच्छा वाला ।

पाठक इस प्रकार इन रूपोंका विचार समजलें ।

पाठ १०

वैशम्पायन उवाच ।

ततो रजन्यां व्युष्टायां धर्मराजं युधिष्ठिरम् ।
भ्रातृभिः सहितः सर्वैरवंदत धनंजयः ॥१॥

म० भारत वन० अ० १६६

"ततः तत्पश्चात्, रजन्यां व्युष्टायां रात्र्यां गतायां, सर्वैः निखिलैः भ्रातृभिः बंधुभिः सहितः धनंजयः विजयः अर्जुनः, युधिष्ठिरं धर्मराजं, अवंदत वंदनं कृतवान् ।"

एतस्मिन्नेव काले तु सर्ववादित्रनिःस्वनः ।
बभूव तुमुलः शब्दस्त्वंतरिक्षे दिवौकसाम् ॥ २ ॥

"एतस्मिन् एव काले अस्मिन् एव समये, तु अंतरिक्षे दिवौकसां देवतानां सर्ववादित्रनिः स्वनःसर्वेषां वादित्राणां शब्दः, तुमुलः महान्,बभूव अभवत् ।

रथनेमिस्वनश्चैव घण्टाशब्दश्च भारत ।
पृथग्व्यालमृगाणां च पक्षिणामिव सर्वशः ॥ ३ ॥

"हे भारत ! रथनेमिस्वनः रथस्य नाभिशब्दः चैव, तथाऽत्र घंटाशब्दः च घंटानां शब्दः च व्यालमृगाणां व्याघ्रमृगादीनां पक्षिणां इव च शब्दः सर्वशः बभूव ।"

४ ब्रह्मचर्य। मूल्य ≤।)
५ योग साधन की तैयारी। मू० १)
६ योग के आसन। मूल्य २)
७ सूर्य भेदन व्यायाम। मूल्य ॥≤)

(४) धर्म शिक्षाके ग्रंथ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा। प्रथमभाग। मू०-)
(२) " " " द्वितीय " मू०=)
(३) वैदिकपाठमाला। मू०≡)

(५) स्वयं शिक्षक माला।

(१) वेदका स्वयं शिक्षक। प्रथमभाग। मू० १॥)
(२) " " " द्वितीय भाग। मू० १॥)

संस्कृत पाठ माला।

संस्कृत सीखनेकी सुगम रीति।

२४ भागोंका मूल्य ६) रु. और १२ भागोंका मूल्य ३॥) रु.

(६) आगम निबंध माला।

(१) वैदिक राज्य पद्धति। मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता। मू. ।।।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र। मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा। मू. ।।)
(६) वैदिक सर्प-विद्या। मू. ।।)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय. मू. ।।)
(८) वेदमें चर्खा। मू. ।।)
(९) शिव संकल्पका विजय मू. ।।।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता। मू. ।।)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ। मू. ।।)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र। मू. ≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न। मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने। मू. ।-)
(१५) वेदमें कृषिविद्या। मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या। मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास मू. ।-)

मंत्री — स्वाध्याय मंडल औंध (जि. सातारा)

मुद्रक — श्रीपाद दामोदर सातवळेकर स्वाध्याय मंडल
भारतमुद्रणालय औंध (जि. सातारा)